International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 6, June- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भीष्म साहनी के 'कबीरा खड़ा बाजार में' चर्चित सामाजिक जीवन

डॉ. अल्ताफ पाषा. डी. एम.
सह-प्राध्यापक
महारानी लक्ष्मी अम्माणी महिला विद्यालय, स्वायत्त
मल्लेश्वरम , बेंगलुरु-560012

चर्चित समस्याएँ

'कबिरा खड़ा बजार में कबीर के मूल्यवान व्यक्तित्व को प्रस्तुत करनेवाली प्रमुख नाट्यकृति है। कबीर की पक्कड़ता, निर्मम अक्कडता और उनकी युग प्रवर्तक सोच इस कृति में पूरी सजीवता के साथ मौजूद है। इस कृति से गुजरते हुए कबीर के संघर्ष को तत्कालीन भारतीय समाज की सामाजिकता आदि को तथा तत्कालीन समाज की धर्मान्धता, तानाशाही आदि से परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

इस नाटक में दिखाई गयी प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित रूप से हैं

१. बाह्याचार और मिथ्याडंबरों की समस्या

मिथ्याचार, बाह्याडंबरों का खण्डन करते हुए कबीर कहते हैं कि ‘भगवान् कण-कण में मौजूद है, उसे पाने के लिए, उसे ढूंढने की, भटकन की आवश्यकता नहीं'। उसी के संबन्ध में उनका निम्नलिखित पद अत्यंत समर्थ और द्रष्टव्य है -

"मोको कहाँ ढूंढरे बन्दे, मैं तो तेरे पास में

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना काबे कैलास में " ॥ उपर्युक्त दोहे में तीर्थाटन संबन्धी विचार देख सकते हैं। हिन्दुओं की मूर्ति पूजा का खण्डन करते हुए कबीर कहते हैं कि -पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूँ पहार । ताते थी चाकी भली पीस खाये संसार "॥

मुसल्मानों रोजा - नमाज आदि विचारों का खण्डन करते हुए कबीर कहते हैं कि

"काकर पायर जोरी कै, मस्जिद लई चुनाय । ता चढ़ मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा भयो खुदाय "॥

रंग बिरंगे टीलों का, पूजा पाठ, नाना विधि से आराधना करना, मूँड़-मुंडाना आदि दोनों जातियों में मौजूद सभी प्रकार के बाह्याडंबरो को दिखाने की कोशिश की है।

२. जात-पात की समस्या

हिन्दू जाति में उसमें भी ब्राह्मणों में मौजूद जातियों के बारे में बताया गया है कि ब्राह्मणों मे १०८ जातियाँ हैं और उनके कई उपजात हैं। कबीर के अनुसार 'भगवान् एक है और धर्म भी, धर्म एक है और वह है मानव धर्म '। सभी धर्म अंत में जाकर उसी भगवान् में मिल जाते हैं। कबीर कहता है कि - 'मैं उसी खुदा का बन्दा हूँ, मेरा मजहब इन्सान की मोहब्बत है । मेरा - परवरदिगार मेरे चारों ओर है उसके नजर में न कोई हिन्दू है न मुसल्मान, जन्म से सभी इन्सान होते हैं वरना ब्राह्मण का बेटा माँ के पेट से ही तिलक लगाकरनिकलता और तुर्क का बेटा खतनी करवाकर निकलता। सभी के लिए एक ही धरती है, एक ही आसमान, एक सूर्य और एक चन्द्र सभी एक जैसे पैदा होते हैं एक जैसे मरते हैं, फिर जात पात का भेद क्यों ?

३. राजनीतिक अस्थिरता

राजनीतिक अस्थिरता उस समय में एक प्रमुख समस्या बनी हुई थी। राजनीति में प्रभावशाली लोगों का हस्तक्षेप होता था, प्रभावी लोगों की मनमानी राजनीति में चलने लगी थी, वह जिस तरह चाहें अपने प्रभाव से अधिकारियों को भी नचा सकते थे, महंत का उदाहरण इस समस्या को उजागर करने में सक्षम है।

४. अधिकार का दुरुपयोग तथा अन्याय की भरमार कोतवाल

महंत की कृपाकटाक्ष के लिए डोम चमारों की बसी - बसाई बस्ती को उजाड़ने भी तत्पर हो जाता है। साथ ही अपने को बड़ा हाकिम के रूप में प्रस्तुत करने बड़ा उत्सुक होता है और दलीलें भी पेश करता है नंदू की मौत, कबीर की झोंपड़ी जलाना तथा कबीर को बन्धी बनाना आदि उसके अधिकार दुरुपयोग तथा असहायकों के प्रति उसका अन्यायको है ।

५. धर्मान्धता

महंत चाँदी के पात्र में से पानी भरकर सामने की ओर दर्शकों की दिशा में कुल्ला करता है तो भक्त जन विशेष रूप से स्त्रीयाँ कुल्ले के पानी से सनी मिट्टी को तर्जनी से उठा-उठाकर माथे, छती, कानों तथा सिर पर लगाती हैं। जब महंत का चरण प्रक्षालन होता है तो उस चरण धुले पानी को स्त्री पुरषादि अंजुली में ले-लेकर पीते तथा मस्तक पर धारण करते हैं। यह सब उस समय समाज में स्थित धर्मान्धता के कुछ उदाहरण हैं ।

६. विलासीपन

चाँदी की झिलमिलाती पालकी पर प्याजी रंग के दुकूल वस्त्र में मोटे से जटाधारी, त्रिपुण्डधारी महंत विराजमान है। बड़ी सी तोंद, बहुत सी मालाएँ, आँकों में बडप्पन का घमंड, पालकी पर सुन्दर छत्र महलाओं द्वारा चामर झुलाना, कुम्भ के मेले में सोने की पालकी में जाना, भोजन-पान, पूजा अर्चना आदि सोने के पात्रों से करना, मठ में (११५) एक सौ प्रन्द्रह हाथियों का होना आदि महंतों का विलासीपन है तो, तिमूरलंग और सिकंदर लोदी राजालोगों के विलासीपन के उदाहरण हैं जब की आम आदमी भूख से तडप रहा है, बाजार में मंदी आयी है - वहाँ उल्लू बोलने लगे हैं। -

७. नीच व्यवहार

विडंबना यह है कि महंतों का दुराचार, नीच व्यवहार भी जनता की नजर में महानता ही प्रतीत होती थी । महंतों का अधिकार प्राप्ति के लिए एकदूसरे की हत्या करना, अधिकार प्राप्ति के बाद सौ-सौ स्त्रीयों के साथ भोग करना महंतों का नीच व्यवहार है तो तिमूरलंग राजा लोगों के नीच व्यवहार का स्त्रीयों को अपहरण करके अपने साथ ले जाना उदाहरण है ।

८. ऊँच नीच की भावना

कबीर, कबीर के मित्र सेना, रैदास, नंदू, पीपा, बशीरा आदि को निम्न दृष्टि से देखना, उनसे बुरा सलूक करना, मौलवी, मुल्ला, पण्डे, पुजारी, महंत, कायस्थ आदि का उनके प्रति व्यवहार आदि ऊँच नीच की भावना को दर्शाने वाले उदाहरण है।

इसके प्रति रैदास कहते है कि -

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 6, June- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जात भी ओछी, करम भी ओछा

ओछा कसब हमारा,

नीचे से प्रभु ऊँच कियो है,

कहै रैदास चमारा।

९. युद्दों की अवैज्ञानिक व्याख्या

सिकंदर लोदी अपने जंग करने को भी दीन की और खौम की खिदमत समझता है। यहाँ पर राजा लोगों की मनमानी, अपना समर्थन आदि दिखाई देता है लेकिन उसकी यह भावना, युद्ध संबंधी व्याख्या कबीर के दृष्टि में अवैज्ञानिक एवं अमानवीय है।

उपर्युक्त आदि अंशों को आधार बनाकर इस नाटक में तत्कालीन समाज में स्थित समस्याओं को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य और संदेश

उद्देश्य

कबीर का मूल्यवान व्यक्तित्व और उसके आदर्श विचारों को बिंबित करते हुए तत्कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक स्थिति जो कि संघर्षमय थी उसे पारिवारिक और सामाजिक पुट देते हुए पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना और उस समय की धर्मान्धता, तानाशाही, बाह्याडंबर, मिथ्याचार आदि का पर्दा फाश करना और आज के समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना ही इस नाटक रचना का मूल उद्देश्य रहा है। जिसका समर्थन निम्नलिखित अंशों द्वारा व्यक्त कर सकते हैं -

मिथ्याडंबरों, बाह्याचारों, पाखण्डों आदि को दर्शाते हुए उनसे बचने तथा समाज को बचाने का मार्ग दर्शाना।

→ जात-पात, ऊँच-नीच, भेद-भाव आदि भावनाओं का निर्मूलन करने तथा मानवता, मानवधर्म का प्रचार भावना जगाना। - प्रसार की

→ राजनीतिक अस्थिरता का मूलोच्छाटन करने के लिए प्रत्येक के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 6, June- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मन में स्वप्रेरणा जगाना या उत्पन्न करना ।

अधिकार दुरुपयोग करनेवालों के प्रति जनता को सचेत करना।

धर्म तथा धार्मिक मुखण्डों के पाखण्डीपन को दर्शाना ।

युद्ध संबन्धी अवैज्ञानिक मनोभाव को दर्शाना ।

संदेश

इस नाटक से अभिव्यक्त होनेवाले संदेश को इस प्रकार अंशों में रखसकते हैं-

→ जातीयता के मिथ्य मान्यताओं के प्रति सचेत करके मानवता, मानवीयता को उजागर करना ।

कबीर के आदर्श विचारों को जनमानस में स्थापित करना ।

ज्ञान, गुरु, दीक्षा, धर्म, संबंधी कबीर के उच्च मानदण्डों को जनुमानस तक समर्थ रूप से पहुँचानामाँ की ममता, आदर्शता, उत्कृष्टता, अपनी शिशु संबंधी उसकी

मानस्थिति आदि का पुठ प्रस्तुत करना ।अतः कबीर कालीन भारतीय समाज की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक वस्तुस्थिति को दर्शाते हुए जनता को कबीर के आदर्श व्यक्तित्व और उसके उत्कृष्ट विचारों से अवगत कराना तथा विकासोन्मुख क्रांतिकारी भावना जगाना इस रचना का मूल उद्देश्य और संदेश रहा है।

शीर्षक की सार्थकता

किसी भी साहित्यिक रचना के लिए शीर्षक का होना अनिवार्य है। शीर्षक के द्वारा ही पाठक या दर्शक किसी रचना को पढ़ने या देखने के लिए उत्सक होता है एक सफल लेखक, जानता है कि उसकी कृति की आधीसफलता उसके शीर्षक पर निर्भर करती है। इस दृष्टिकोण से शीर्षक का महत्व किसी भी कृति के लिए समान और सर्वाधिक होता है।

शीर्षक यथा संभव छोटा और सार्थक होना चाहिए। कबिरा खड़ा बजार में चरित्र प्रधान शीर्षक है। बेपरवाह, दृढ़ और उग्र, संक्षेप में मस्तमौला कबीर का व्यक्तित्व सदियों से भारतीय मन और मानिषा को प्रभावित करता आ रहा है। यही कारण है कि पाँच सौ वर्षों से कबीर के पद

भारतीयों की जबान पर हैं और उनके विषय में कितनी ही कहानियाँ लोक विश्रुत हैं। अपने युग की तानाशाही, धर्मान्धता, बाह्याचार और मिथ्या धारणाओं के विरुद्ध अनथक संघर्ष करनेवाला यह व्यक्ति हमारे बीच आज भी स्थायी और प्रेरक मूल्य की तरह स्थापित है ।

नाटक का नायक कबीर है। एक दृष्टि से वह नाटक के लिए आत्मा के समान है। इस चरित्र के बिना नाटक की कथा आगे नहीं बढ़ती । नाटक की सभी घटनाएँ इस पात्र से जुडी हैं

कबीर का व्यक्तित्व इतना महान है कि बाकी चरित्र उसके आगे अपने व्यक्तित्व को खो बैठते हैं वह मानो एक चौराहे के समान है जिसमें बाकी चरित्र आकर मिल जाते हैं। अगर इस नाटक के लिए 'कबीर एक महान वृक्ष के समान है तो बाकी चरित्र उसकी डालियाँ हैं'। शीर्षक के बारे में नाटककार ने लिखा है कि - श्री एम. के. रैना जी के सुझाव पर ही नाटक का नाम कबीरदास न रखकर उसके बदले 'कबिरा खड़ा बजार में' रखा गया।कबीर भी अपने सत्संग का समर्थन करते हुए यही कहते हैं कि "कबिरा खड़ा बजार में, लिए लगुटिये हाथ जो घर फूँके आपना -चले हमारे साथ "॥

नाटक में आदि से लेकर अंत तक कबीर की महानता दिखाई देती है। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सभी घटनाएँ कबीर से जुडी हुई है। सभी घटनाएँ कबीर से पूर्ण रूप से संबन्धित हैं । 'कबिरा खड़ा बजार में' चरित्र प्रधान शीर्षक है। शीर्षक अत्यंत संक्षिप्त एवं सार्थक है। इसमें विचारों का गुफन है। कुतूहल की भावना है । सचमुच यह शीर्षक नाटक के लिए सर्वथा योग्य और सार्थक है।

उपसंहार

'भीष्म साहनी' ने नाटक साहित्य में अपना एक अलग और महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। ऐसे नाटक संसार में बहुत ही कम संख्या में लिखे गए हैं।'भीष्म सहानी' हिन्दी के अति यथार्थवादी नाटककार हैं। साहनी ने आदर्श की आड़ में विलास, जुगुप्सा और बलात्कार की रोमांचकारी और करुण घटनाओं को नाटक में प्रस्तुत किया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 6, June- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सहायक ग्रन्थ -सूची

१. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ. शिवकुमार शर्मा
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नगेंद्र: रामचंद्र शुक्ल
३. तमस: भीष्म साहनी
४. समाजशास्त्र विवेचन: नरेन्द्र कुमार सिंधि
५. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. शंकरलाल जायसवाल
६. कबिरा खड़ा बाजार में: भीष्म साहनी
७. गाँधी विचारधारा का हिन्दी: डॉ. अरविंद जोशी